मासिक पत्र मार्च, 2020 (फाल्गुन मास)

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति हरिद्वार

॥ गावो विश्वस्य मातरः ॥

श्रीकृष्णायन

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समितिः संक्षिप्त परिचय

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति हरिद्वार, उत्तराखंड की सबसे विशाल गोरक्षाशाला है, जिसकी शुरुआत देशी गोवंश की सेवा और रक्षा की सद्भावना के साथ साल 2011 में बूढ़ी और बीमार गायों के साथ की गई थी। आज इस गोरक्षाशाला में 3000 से अधिक गोवंश की सेवा में गोसेवक सर्दी, गर्मी और बरसात की परवाह न करते हुए 24 घंटे इस पुनीत कार्य को करने में लगे हुए हैं।

कई एकड़ में फैली इस गोरक्षाशाला में बायो-सीएनजी प्लांट तथा 1200 लीटर की क्षमता वाले सोलर थर्मल पावर यूरिन डिस्टिलेशन प्लांट को स्थापित किया गया है। गोमाता को कत्लखाने में जाने से बचाने के उद्देश्य से तैयार इस गोरक्षाशाला में देशी गोवंश जैसे राठी, कांक्रेज, हरियाणवी, थारपारकर और पहाड़ी नस्ल की गायों को

गो महिमा

यत्र गावः प्रसन्नाः स्युः प्रसन्नास्तत्र सम्पदः।
यत्र गावो विषण्णाः स्युर्विषण्णास्तत्र सम्पदः॥

अर्थात्
जहां गाय प्रसन्न रहती हैं, वहां सारी संपत्तियां प्रसन्न रहती हैं।
जहां गाय दुख पाती हैं, वहां सारी संपत्तियां दुखी हो जाती हैं।।

गोवंश भारतीय जीवन, संस्कृति और इतिहास का अटूट अंग हैं। हिंदू धर्म-ग्रंथों के अनुसार, जब से इस सृष्टि की रचना हुई है, तभी से गो इतिहास का उदय माना जाता है। हिंदू मान्यताओं में गाय को माता स्वरूप माना गया है। लेकिन गाय केवल हम भारतीयों की ही माता नहीं अपितु 'गावो विश्वस्य मातरः' यानी समस्त विश्व की माता है। गोमाता के शरीर में तैंतीस करोड़ देवी-देवता निवास करते हैं।

आयुर्वेद के जन्मदाता एवं औषधियों के स्वामी धन्वंतरि ने गो दुग्ध, गो घी, गोदधि, गोमूत्र और गोबर के मिश्रण से 'पंचगव्य' की रचना की थी। प्राचीन काल में गाय के गोबर और मूत्र का इस्तेमाल पर्यावरण-रक्षक के रूप में किया जाता था। शरीर की शुद्धि के लिए मानव शरीर पर गोमूत्र का छिड़काव करना आम बात थी। आज भी गांव-देहात में गाय के गोबर का इस्तेमाल कच्चे घरों की दीवारों तथा घर-आंगन को लीपने के लिए किया जाता है।

रखा गया है। प्राकृतिक वातावरण में स्थापित इस गोरक्षाशाला में एक पशु-चिकित्सालय, भूसा भंडारगृह तथा गोमाताओं को धूप और बारिश से बचाने के लिए शेड की उचित व्यवस्था है। इस गोशाला की सबसे खास बात यह है कि यहां गोमाता से प्राप्त दुग्ध या अन्य कोई दुग्ध उत्पाद को बेचा नहीं जाता है। इसके अलावा श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति की अन्य शाखाएं ग्वालियर (मध्य प्रदेश) तथा सबलगढ़ (उत्तर प्रदेश) में भी स्थापित की जा चुकी हैं।

कार्यरत प्लांट

बायो-सीएनजी

देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति, हरिद्वार में स्थित इस बायो-

सीएनजी प्लांट में देशी गायों के 25000 किलोग्राम गोबर से प्रतिदिन 400 किलोग्राम सीएनजी का उत्पादन किया जाता है। साथ ही जैविक खाद का भी उत्पादन हो रहा है।

जैविक खाद के फायदे

जैविक खेती एक सदाबहार कृषि पद्धति है जोकि पर्यावरण, जल व वायु की शुद्धता को बनाए रखती है। जैविक खेती के ज़रिए भारतीय किसान अपने

खेतों के स्वास्थ्य को दुरुस्त रखने के साथ-साथ अपना आर्थिक स्वास्थ्य भी सुधार सकते हैं। जैविक खाद ज़हरीले रासायनिक फर्टिलाइजर्स का उचित विकल्प है, जिसके इस्तेमाल से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है, सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ती है तथा पैदावार भी बढ़िया होती है। साथ ही किसान भाइयों द्वारा महंगी रासायनिक खादों के उपयोग के बजाय जैविक खाद का इस्तेमाल किए जाने से उन्हें खेती में आर्थिक फायदा भी मिलता है।

गोमाता के वैज्ञानिक महत्व

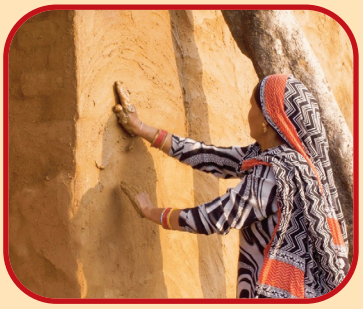

- महान रूसी वैज्ञानिक शिरोविच की एक रिसर्च के मुताबिक, गोमाता के दूध में रेडियो विकिरण यानी अटॉमिक रेडिएशन से रक्षा करने की सर्वाधिक क्षमता होती है।
- जिन घरों में गाय के गोबर से लिपाई-पुताई की जाती है, वो घर रेडियो विकिरण से सुरक्षित रहते हैं।
- गाय का दूध हृदय रोग में बेहद लाभकारी है।
- गाय का दूध शरीर में स्फूर्ति, आलस्यहीनता और चुस्ती लाता है।
- गाय का दूध स्मरण-शक्ति को बढ़ाने में बेहद फायदेमंद है।
- गाय और उसके बछड़े के रंभाने की आवाज से मनुष्य की कई मानसिक विकृतियां तथा रोग खुद-ब-खुद दूर हो जाते हैं।
- क्षय रोगियों को गाय के बाड़े अथवा गोशाला में रखने से उनके शरीर में मौजूद क्षय रोग के कीटाणु गोबर व गोमूत्र की गंध से स्वयं मर जाते हैं।
- गाय की रीढ़ में सूर्य-केतु नाड़ी होती है, जोकि सूर्य के प्रकाश में जाग्रत होती है। नाड़ी के जाग्रत होने पर वह पीले रंग का पदार्थ छोड़ती है। इसीलिए गाय का दूध पीले रंग का होता है। गाय के पीले दूध में मौजूद कैरोटिन सर्व-रोगनाशक, सर्व-विष विनाशक होता है।

गोअर्क

देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति, हरिद्वार में स्थित सोलर थर्मल पावर यूरिन डिस्टिलेशन प्लांट तथा सोलर प्लांट से प्रतिदिन 800 लीटर गोअर्क तैयार किया जाता है।

गोबर के औषधीय गुण

आग से जलने के उपरांत गाय के गोबर का लेपन किसी रामबाण औषधि से कम नहीं है। त्वचा के जलने की स्थिति में गाय के ताज़ा गोबर का बार-बार लेप करते रहने तथा उसे ठंडे पानी से धोते रहने से त्वचा में जलन कम होती है और किसी दवा की अपेक्षा जल्दी लाभ मिलता है। सर्पदंश, विषधर सांप, बिच्छू या अन्य किसी ज़हरीले जीव के काटने के उपरांत रोगी को गाय का गोबर पिलाने तथा उसके शरीर पर गोबर का लेप करने से ज़हर का प्रभाव खत्म हो जाता है। गाय के गोबर में करोड़ों की संख्या में सूक्ष्म जीवाणु होते हैं। इतना ही नहीं गाय के सूखे गोबर की राख को पानी में मिलाकर पीने से मिर्गी की बीमारी में लाभ मिलता है।

लग्ज़री कार पर किया गोबर का लेप

हाल ही में अहमदाबाद की रहने वाली सेजल शाह अपनी नई टोयोटा कोरोला अल्टिस कार को गाय के गोबर से लीपने के बाद सुर्खियों में आ गई थीं। उनका कहना था कि गाय के गोबर का लेप मेरी कार के अंदर के तापमान को बाहरी तापमान से कम रखेगा।

सेजल शाह के अनुसार, उनके मन में यह विचार अपने घर की दीवारों तथा घर-आंगन को गाय के गोबर से लीपने के बाद आया। ऐसा करने के बाद इनके घर के तापमान में काफी परिवर्तन आया था। इसलिए इन्होंने अपनी नई कार पर इस प्रक्रिया को आज़माने का फैसला किया और उसके परिणाम भी काफी सकारात्मक आए। गाय के गोबर के लेप से इनकी कार के अंदर का तापमान बाहर के तापमान से करीब 10 डिग्री सेल्सियस कम हो गया।

गोमूत्र के लाभ

गोमूत्रं गोमयं दुग्धं गोधूलिं गोष्ठगोष्पदम्।
पक्कसस्यान्वितं क्षेत्रं दृष्टा पुण्यं लभेद् ध्रुवम्॥

अर्थात्

गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध, गोधूलि, गोशाला, गोखुड़ तथा पकी हुई फसल से भरे खेत को देखने भर से पुण्य लाभ की प्राप्ति होती है। शास्त्रों के अनुसार गोमूत्र में मां गंगा का वास होता है। अपने औषधीय गुणों की दृष्टि से इसे महा औषधि माना गया है।

गोमूत्र पोटेशियम, मैग्नीशियम क्लोराइड, फ़ॉस्फेट, अमोनिया, कैरोटिन, स्वर्ण क्षार आदि पोषक तत्वों से युक्त है जोकि मधुमेह, दिल की बीमारी, कैंसर, चर्म रोग, माइग्रेन सहित 108 प्रकार के रोगों में लाभकारी है। गरुड़ पुराण के अनुसार, गोमूत्र को देखने भर से मनुष्य को पुण्य लाभ की प्राप्ति होती है।

पंचगव्य-सर्वरोगहारी

चरक संहिता में 'पंचगव्य' यानी गोदुग्ध (दूध), गोदधि (दही), गोघृत (घी), गोमूत्र (मूत्र) और गोमेह (गोबर) को कई रोगों के इलाज में कारगर बताया गया है। यह एक अच्छा एंटी-ऑक्सीडेंट व विष-शोधक भी है। उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त कई असाध्य रोगों में भी 'पंचगव्य' की भूमिका महत्वपूर्ण है।

■ **गोदुग्ध (दूध) :** गाय का दूध बेहद पौष्टिक आहार है। दुनिया भर में ए-2 प्रोटीन केवल देशी गाय के घी में पाया जाता है। इसके सेवन से फैट नहीं बढ़ता और इससे पाचन संबंधी दिक्कतें भी नहीं आती हैं।

■ **गोदधि (दही) :** गाय के दूध से बनने वाले दही को बेहद पौष्टिक माना जाता है। दही में कुछ ऐसे विटामिन और मिनरल्स होते हैं जो खून की कमी को दूर करने में सहायता करते हैं। दही कई रोगों से बचाव भी करता है।

■ **गोघृत (घी) :** गाय के घी को अमृत माना गया है। यह हमें स्वस्थ बनाने के साथ-साथ कई असाध्य रोगों व विकारों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

■ **गोमूत्र (मूत्र) :** गाय के मूत्र में कई तरह के खनिज पाए जाते हैं। अपने औषधीय गुणों की वजह से इसे महौषधि माना गया है।

■ **गोमेह (गोबर) :** शास्त्रों के अनुसार गाय के गोबर में महालक्ष्मी का वास बताया गया है। गोबर को प्राकृतिक ईंधन, खाद और कीटनाशक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। गाय के गोबर का मंगल कार्यों के साथ-साथ चर्म रोगों में उपचारीय महत्व सर्वविदित है।

रोग एवं उनके निदान

संपूर्ण ब्रह्मांड पांच तत्वों जैसे आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी से मिलकर बना है। ये सभी तत्व शरीर में सूक्ष्म ऊर्जा के स्रोत हैं। इन्हीं तत्वों के संतुलन से हमारा स्वास्थ्य बना रहता है। पंचगव्य शरीर की कई व्याधियों व रोगों में रामबाण सिद्ध हुआ है। वात, पित्त और वायु दोष से उत्पन्न रोगों को दूर करने में पंचगव्य की अहम भूमिका है।

वात दोष : वायु व आकाश तत्व का अधिक होना। इसमें बदन व हड्डियों में दर्द, अंगों का ठंडा या सुन्न होना, कब्ज़, जोड़ों में ढीलापन आदि समस्याएं होती हैं।

पित्त दोष : अग्नि तत्व का अधिक होना। इसके लक्षणों में थकावट, नींद की कमी, शरीर में तेज जलन, अंगों से दुर्गंध आना व त्वचा, मल-मूत्र, नाखूनों व आंखों का रंग पीला पड़ना मुख्य लक्षण हैं।

कफ दोष : जल तत्व का अधिक होना। इसके लक्षण कमजोर पाच्य या अपाच्य, सूजन, आलस्य, तनाव, कफ, अस्थमा व दमा आदि होते हैं।

वर्तमान में जारी कार्य

■ 1000 देशी गायों के लिए हरिद्वार, पीली पड़ाव क्षेत्र में शेड-घर का निर्माण।

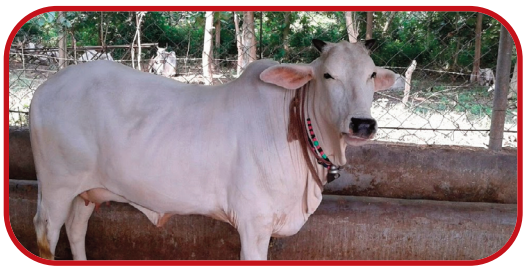

■ गायों के पानी पीने के लिए वाटर टैंक का निर्माण।

■ जंगली जानवरों से गोवंश की रक्षा के लिए गोशाला के चारों ओर कंटीले तारों की बाड़ का निर्माण कार्य जारी है।

गोवंश की रक्षा हेतु दान

परमपिता परमेश्वर की प्रेरणा और आशीर्वाद से हमने मोक्षदायिनी गोमाता की सेवा का जो संकल्प लिया था, उसे आप सभी उदार और कृपालु दान-दाताओं के सहयोग के बिना पूरा करना असंभव था। विगत वर्ष आप सभी दानी-जनों ने अपनी श्रद्धानुसार गोमाता की सेवा में चारे के लिए भूसे की व्यवस्था की थी। इस वर्ष

भी आप सभी दानी-जन अपने सामर्थ्य व श्रद्धानुसार गोमाता के लिए भूसे की व्यवस्था कर अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं। इसके लिए आप सभी प्रबुद्धजनो को एक बात याद रखनी होगी कि भूसा मार्च से लेकर अप्रैल माह तक ही प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहता है। अतः आप सभी दानी-जन इन्हीं महीनों में गोवंश के लिए भूसे का दान करें ताकि समय रहते भूसे की पर्याप्त व्यवस्था हो जाए।

आप सभी दानी-जनों से निवेदन है कि अपने परिवार के उद्धार के लिए गोसेवा के इस पुनीत कार्य को पूरा करने में अपना अधिक से अधिक योगदान दें। साथ ही अन्य उदारजनों को भी गोसेवा के लिए प्रेरित कर इस महान संकल्प का भागीदार बनाएं। धर्म के इस पुनीत कार्य को आप जैसे दानी-जनों के सहयोग के बिना पूर्ण करना असंभव है। इसलिए आप सभी दानी-जनों से अनुरोध है कि इस महायज्ञ-महादान के आजीवन मासिक सदस्य बनकर गोवंश को बचाने का पुण्य कमाएं ताकि आप और आपके परिवार को भी गोमाता का आशीर्वाद प्राप्त हो सके।

अन्य शाखाएं

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
गांव-बसोचांदपुर (गैंडीखाता)
ज़िला-हरिद्वार, उत्तराखंड
पिन कोड-246663

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
पोस्ट ऑफिस, पीली पड़ाव,
ज़िला हरिद्वार

बायो-सीएनजी प्लांट
पोस्ट ऑफिस, नौरंगाबाद,
ज़िला हरिद्वार
khad@krishnayangauraksha.org

गांव-सबलगढ़ (भागुवाला)
ज़िला बिजनौर, उत्तर प्रदेश
पिन कोड-246732

आदर्श गोशाला
लाल्तिपारा, ग्वालियर, मध्य प्रदेश
पिन कोड-474006

स्वामी ईश्वर दास जी महाराज
(अध्यक्ष)
मोबाइल: 9412902268

स्वामी गणेशानंद जी महाराज
(सचिव)
मोबाइल: 8958942681